53 वर्षों से निरंतर
दक्षिण से प्रकाशित
हिन्दी अकादमी, हैदराबाद

ISSN 2277 - 9264

पीयर रिव्यूड पत्रिका

शोध और सृजन की त्रैमासिक पत्रिका

संकल्य

जुलाई-सितंबर 2025
अंक - 3

ISSN : 2277-9264

पीयर रिव्यूड जर्नल

मधुसूदन चतुर्वेदी एवं प्रो. बैजनाथ चतुर्वेदी कीर्ति स्तंभ

स्थापना वर्ष : 1956

संकल्प

त्रैमासिक

वर्ष : 53 : अंक–3, जुलाई–सितंबर, 2025

प्रधान संपादक
प्रो. आर. एस. सर्राजु

प्रेरणास्रोत
विवेकी राय
प्रो. टी. मोहन सिंह

कानूनी सलाहकार
सुश्री कविता ठाकुर

संपादक
डॉ. गोरख नाथ तिवारी
डॉ. शशिकांत मिश्र

परामर्शदाता मंडल

प्रो. टी. आर. भट्ट
प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल
प्रो. दिलीप सिंह
प्रो. तेजस्वी कट्टीमनी
प्रो. नंद किशोर पांडेय
प्रो. शुभदा वांजपे
श्री ओम धीरज
श्री रुद्रनाथ मिश्र

प्रबंध संपादक
रेखा तिवारी

आवरण चित्र
श्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय
वरिष्ठ साहित्यकार व कलाविद्, इंदौर

मूल्यांकन समिति

प्रो. सुशील कुमार शर्मा
प्रो. प्रभाकर त्रिपाठी
प्रो. जयंतकर शर्मा
प्रो. एम. श्याम राव
प्रो. भारत भूषण

सम्मानीय संरक्षक

श्री राजेश्वर तिवारी, आई.ए.एस.
श्री लाल जी राय, आई.ए.एस.
श्री जितेंद्र रेड्डी, पूर्व संसद सदस्य
प्रो. आर. के. मिश्रा

प्रकाशक
डॉ. गोरख नाथ तिवारी
सचिव : हिंदी अकादमी, हैदराबाद

संपादकीय कार्यालय

प्लॉट नं. 10, रोड नं. 6, समतापुरी कॉलोनी
न्यू नागोल के पास, हैदराबाद– 500 035 (तेलंगाना)

संकल्य (त्रैमासिक)

- प्रकाशित सामग्री की रीति–नीति या विचारों से **हिंदी अकादमी, हैदराबाद** या संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।
- **'संकल्य'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल हैदराबाद न्यायालय के अधीन होंगे।
- **हिंदी अकादमी** तथा हिंदी सेवा के लिए समर्पित **'संकल्य'** त्रैमासिक के सभी पद अवैतनिक हैं।

शुल्क भेजने का पता :

मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट **हिंदी अकादमी** के नाम

सचिव : डॉ. गोरख नाथ तिवारी

मकान नं. 22–7/7/2/ए, जय भवानी नगर,
रालागुडा, सिद्दिल गुट्टा कमान, शमशाबाद, के.वी. रंगारेड्डी,
हैदराबाद– 501218 (तेलंगाना), ई–मेल : **hindiakadami@gmail.com**
फोन : 9032117105

ऑनलाइन संकल्य की सदस्यता शुल्क भेजने हेतु पृष्ठ संख्या 136 पर बैंक डिटेल देखें।

मूल्य :

एक अंक का मूल्य रु. 125/–
वार्षिक : रु.500/–, **आजीवन सदस्यता :** रु.6,000/– (व्यक्तिगत),
संस्थागत आजीवन : रु.7,500/–, संस्थाओं के लिए : **वार्षिक** सदस्यता : रु. 800/–,
संरक्षक सदस्यता शुल्क : रु.7,500/–

मुद्रक :

कर्षक आर्ट प्रिंटर्स
40–ए.पी.एच.बी.
विद्यानगर, हैदराबाद–500 044
फोन : 040–27618261, 27653348

संकल्य पत्रिका में प्रकाशन हेतु Kruti Dev 010 या Unicode Mangal फ़ांट में सामग्री टाइप करवाकर ई–मेल : hindiakadami@gmail.com पर भेजें।

ISSN 2277-9264/ पीयर रिव्यूड में सम्मिलित जर्नल RNI No. 25388/74

संकल्य त्रैमासिक

वर्ष : 53 : अंक–3, जुलाई–सितंबर, 2025

अनुक्रम Contents

संपादकीय

आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास : राष्ट्र निर्माण : प्रो. आर. एस. सर्राजु 05

आलेख

1. सौ वंसत के सौंदर्य के पारखी : कवि रामदरश मिश्र : डॉ. शंशिकांत मिश्र, अंशु कुमारी 06
2. 'मौर्य विजय' का समाज–भाषावैज्ञानिक संदर्भ : डॉ. सुनील कुमार 13
3. राजनीति का कटु यथार्थ और लोकतंत्र का आईना 'एकलव्य का अंगूठा' : प्रो. सदानंद भोसले, अनिल शिवाजी झोळ 20
4. अबोध बंधु के काव्य में व्यष्टि और समष्टिपरक मूल्य : राकेश सिंह, प्रो. गुड्डी बिष्ट पंवार 30
5. हरिवंश राय बच्चन के काव्य में पर्यावरण विमर्श : कमला बाई दीवान, प्रो. अनुसुइया अग्रवाल 38
6. कवि चंद्रकुँवर बर्त्वाल के काव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर : कु. रेशमा, प्रो. गुड्डी बिष्ट पंवार 43
7. कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह कृत एकांकी महाकवि चंद : एक विवेचन : कामन सिबोह, प्रो. सुशील कुमार शर्मा 52
8. गीत संग्रह 'मैं दर्पण हूँ सच बोलूँगा' में अभिव्यक्त प्रकृति, प्रेम और ग्रामीण जीवन : सोनू कुमार यादव 57
9. गढ़वाल हिमालय के लोक गीत देव संस्कृति का संदर्भ : नवीन चंद्र भट्ट, प्रो. गुड्डी बिष्ट पंवार 62
10. पारिस्थितिकीय चिंतन और भक्तिकालीन साहित्य : डॉ. वीरेन्द्र सिंह 69
11. रमणिका गुप्ता के उपन्यास सीता –मौसी में नारी जागृति का स्वर : बबली कुमारी 80
12. मणिकुंतला भट्टाचार्य का उपन्यास 'मुक्ति' : एक अध्ययन : डॉ. चन्दना शर्मा 86
13. हिंदी–साहित्य में शिवानी के लेखन का महत्व : डॉ. राजेश राव : डॉ. राजेश राव 90
14. अंधेरे में' : 21वीं सदी की त्रासदी : प्रो. जी.वी. रत्नाकर 94

15. काशीनाथ सिंह के कथा साहित्य में उपभोक्तावादी संस्कृति	: डॉ. प्रीति	98
16. महादेवी वर्मा के काव्य में प्रकृति–चित्रण	: चित्रा	104
17. जगदीश चंद्र के उपन्यासों में वर्ग संघर्ष	: डॉ. नीरू	110
18. हिंदी यूट्यूब चौनलों में भारतीय ज्ञान परंपरा : विविध आयाम	: प्रो. सुशील कुमार शर्मा	116
19. हिंदी साहित्य के प्रमुख संतों में समाज उत्थान की दृष्टि	: डॉ. संतोष गिरहे	124
20. नरेश मेहता के खंडकाव्यों का भाव वैशिष्ट्य	: प्रीतम कुमार दास डॉ. गिरजा शंकर गौतम	129
21. संत रैदास की सामाजिक दृष्टि की प्रासंगिकता	: डॉ. संजय कुमार सेठ	137
22. गुरु जम्भेश्वर जी के सिद्धांत : समसामयिक पर्यावरण सुरक्षा व चुनौतियाँ	: विष्णु डॉ. शशिकांत मिश्र	143
23. प्रेमचन्द के साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा की उपस्थिति	: डॉ. संतोष कुमार गुप्ता डॉ. मनोज कुमार स्वामी	150
24. साहित्य में प्रकृति–विषयक संवेदना	: डॉ. रत्नेश कुमार	156
25. हिंदी काव्य में वर्ग भेद और सामाजिक न्याय	: डॉ. किरण बाला अरोरा	161
26. भाषा, साहित्य और संस्कृति का अंतर्संबंध (जम्बू–कश्मीर के विशेष संदर्भ में	: प्रभाकर कुमार डॉ. अजय कुमार सिंह	168
27. 'संशय की एक रात' और 'महाप्रस्थान' में सत्य नीति एवं धर्म का त्रिकोण	: रूचि शर्मा प्रो. चंद्रकांत सिंह	174
28. भारतीय पर्यटन एवं आतिथ्य शिक्षा में हिंदी भाषा की उभरती आवश्यकता (राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के विशेष संदर्भ में)	: श्रीमती पूजा शर्मा डॉ. अखिलेश सिंह डॉ. अमित कुमार सिंह	180

पुस्तक समीक्षा

29. डिजिटल हिंदी का मानचित्र : हिंदी भाषा और तकनीक	: प्रो. सुशील कुमार शर्मा	189

संपादकीय

आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास : राष्ट्र–निर्माण

प्रो. आर. एस. सर्राजु

भारतीय चिंतन परंपरा में कहा गया है कि 'सर्वं शब्देन भासते'। अर्थात् सब कुछ शब्दों के माध्यम से ही अभिव्यक्त होता है और संप्रेषित होता है। यह कथन भारतीय व्याकरण और मीमांसा दर्शन की गहरी सोच की ओर संकेत करता है। शब्द को सृजन के आधार के रूप में स्वीकार किया गया है। शब्दों के माध्यम से ही पूरे विश्व में ज्ञान का संप्रेषण होता है। शब्दों के बल पर ही अर्थ प्रकाशित होता है। शब्द हमारे संज्ञान की प्रक्रिया के मूल में है और सारी दुनिया का कार्य–व्यापार शब्दों के आधार पर ही होता रहता है।

शब्दों के बल पर निर्मित भाषाओं को हम जीवन भर सीखते रहते हैं। भाषाएँ निरंतर परिवर्धित और परिवर्तित होती रहती हैं। जैसे–जैसे हमारे ज्ञान का विस्तार होता रहता है वैसे–वैसे हम नए शब्दों का भी निर्माण करते रहते हैं। आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास भारतीय समाज के विकास की विभिन्न अवस्थाओं का परिचय देता है। आधुनिक भारतीय भाषाएँ अपनी पूर्ववर्ती भाषा संस्कृत से शब्दों को सहज रूप से ग्रहण करती हुई विकसित हुई थी। आज भी इस विकास का क्रम चलता आ रहा है। वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी के बल पर ज्ञानाधारित समाजों का विकास हो रहा है। इस क्रम में अंग्रेजी और विदेशी भाषाओं से भारतीय भाषाओं में ज्ञान का अंतरण हो रहा है। भारतीय भाषाओं में नए ज्ञान की अभिव्यक्ति भी हो रही है। इस दृष्टि से भारतीय भाषाओं को समृद्ध बनाने का प्रयास जारी है। इस क्रम में भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक तथा तकनीकी अभिव्यक्तियों के लिए एक समान शब्दावली बनाएँ तो भारतीय भाषाओं में अंतर भाषीय संप्रेषणीयता भी बढ़ेगी। संस्कृत भाषा में शब्द–निर्माण की पूर्व निर्धारित स्वीकृत प्रक्रिया विकसित की गई थी। वर्तमान के लिए आवश्यक शब्दों का निर्माण इस प्रक्रिया के आलोक में धातुओं के साथ उपसर्गों और प्रत्ययों के संयोग से हो जाता है। अतः संस्कृत सहित भारतीय भाषाओं के प्रयोक्ता विद्वानों को वर्तमान के लिए आवश्यक शब्द निर्माण की दिशा में कार्यरत होना चाहिए। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी संप्रेषण क्षमता भी बढ़ेगी। भारतीय भाषाओं के समृद्ध होने से भारतीय जनता का कौशल–विकास होगा। परिणामस्वरूप भारतीय जनतंत्र सुदृढ़ होगा। अतः योजनाबद्ध रूप से भारतीय भाषाओं का विकास आज की आवश्यकता है।

प्रधान संपादक